कनाडा के क्यूबक राज्य में जन्मीं फ्रेंच-कैनेडियन मूल की मैरी इलनगोवन सन् 1993 से भारत में रह रही हैं। मैरी ने स्व. के. जे. गोविंदराजन से भरतनाट्यम की शिक्षा ली है। गुरु गोविंदराजन के बेटे मशहूर शास्त्रीय गायक जी. इलनगोवन से विवाह करने के पश्चात अब वे कार्यक्रम करने के साथ-साथ भरतनाट्यम की शिक्षा भी दे रही हैं

खुशियां तमाम हैं थोड़े से गम भी

मैरी इलनगोवन

इस देश में आकर मुझे ऐसे बहुत से अनुभव हुए, जो मेरी यादों के सुखद हिस्से हैं। ऐसी ही एक घटना मुझे याद आ रही है। हम शादी के बाद महाबलीपुरम घूमने गए हुए थे। वहां का अद्‌भुत प्राकृतिक सौंदर्य देखकर लगा कि यहां पर मुझे नृत्य करना चाहिए। प्रकृति की छांव में नृत्य करते हुए वे क्षण कितने अद्‌भुत और सुखद होंगे, इसकी कल्पना करके ही मैं रोमांचित हुए जा रही थी। उस समय तो यह संभव नहीं हो सका, लेकिन भगवान को शायद मेरी इच्छा पूरी करनी थी। सन् 2000 में एक कार्यक्रम के सिलसिले में वहां दुबारा जाना हुआ और मेरी इच्छा पूरी हो गई। उस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक भी आए हुए थे। उन्हीं में 4-5 लोग फ्रांस से भी आए थे। वे मुझसे अंग्रेजी में बात करने लगे। लेकिन, जब मैंने उनसे फ्रेंच में बात की तो उनकी हैरानी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने मुझे बताया कि वे मुझे इंडियन समझ रहे थे। शायद यह मेरे लिए कॉम्प्लीमेंट था कि मैं अपनी नृत्य साधना और इस देश में इतना रम चुकी हूं कि लोग मुझे हिंदुस्तानी समझते हैं।

हिंदुस्तान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और भरतनाट्यम से मैं शुरू से ही बहुत ज्यादा प्रभावित रही हूं। मेरी यही चाहत मुझे कनाडा से भारत खींच लाई। मैं सन् 1993 में हिंदुस्तान आ गई थी। यह देश वास्तव में बेहद खूबसूरत है। लेकिन, हम इस खूबसूरती का आनंद तब तक नहीं ले पाएंगे, जब तक यहां के लोगों से मिलेंगे-जुलेंगे नहीं, उनके खान-पान, भाषा और रीति-रिवाजों को समझेंगे नहीं। इसके लिए हमें किताबों और चित्रों की दुनिया से बाहर निकल कर हकीकत की दुनिया में आना होगा और यही मैंने किया भी। यहां आकर मैंने गुरु के. जे. गोविंदराजन से भरतनाट्यम की शिक्षा ली। गुरुजी के आशीर्वाद से ही मैं आज यहां तक पहुंच पाई हूं। जहां तक मेरे नृत्य की बात है तो मैं क्लाइमेट चेंज पर नृत्य की प्रस्तुति देने वाली पहली नृत्यांगना हूं। मेरे कार्यक्रम को डब्ल्यूएचओ के चेयरपर्सन ने देखा और खूब तारीफ भी की। उन्होंने

फोटो : शलीप

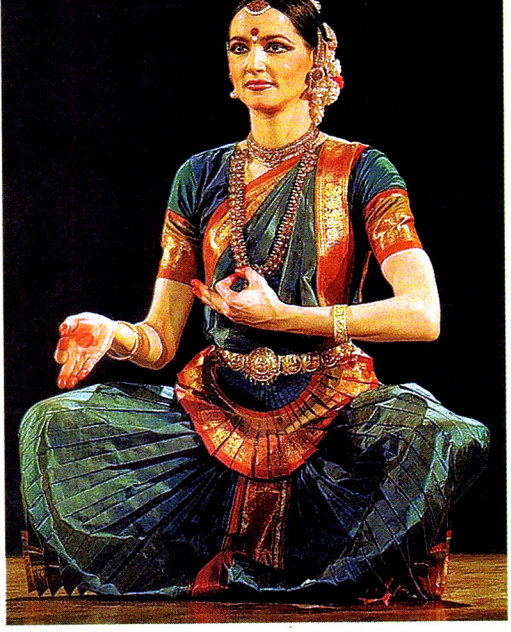

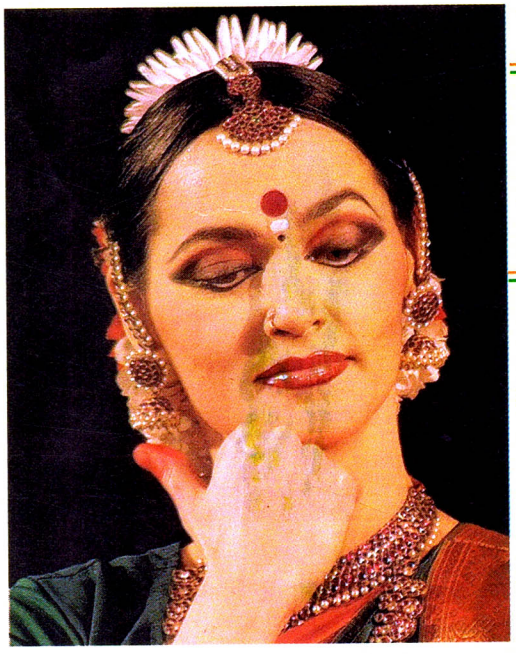

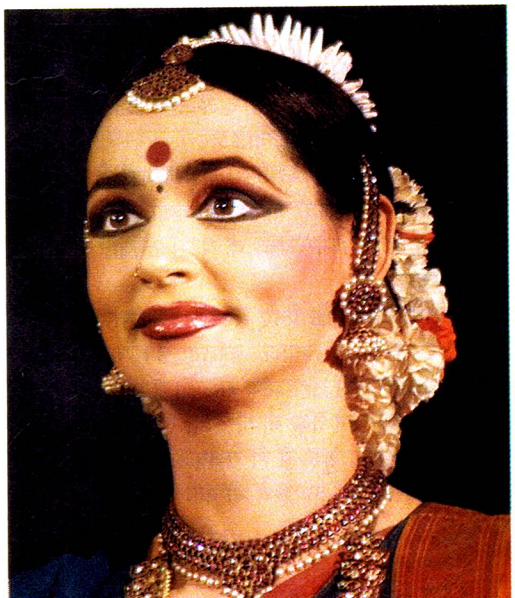

फोटो : प्रभात सिंह

डब्ल्यूएचओ के लिए मेरे इस कार्यक्रम की एक फिल्म भी बनवाई। मुझे सबसे अच्छी बात यह लगी कि यहां के लोग कल्चर और फैमिली ओरिएंटेड हैं। यहां लोग बिना मांगे मदद कर देते हैं। यहां के लोगों से मुझे बहुत सहयोग व प्यार मिला है।

नृत्य की शिक्षा पूरी करने के बाद गुरुजी के बेटे मशहूर शास्त्रीय गायक जी. इलनगोवन से मेरा विवाह हो गया। विवाह की स्वीकृति लेने के लिए मेरे पति मेरे माता-पिता से मिलने कनाडा गए। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा यदि तुम दोनों इस शादी से खुश हो तो हमें कोई ऐतराज नहीं है। यहीं नहीं, हिंदुस्तान में बसने के मेरे फैसले पर उनका कहना था कि यदि तुम समझती हो कि इस देश में अपने पति के साथ ज्यादा बेहतर और सुखी रह सकती हो तो हमें भला क्या दिक्कत हो सकती है। बस, जो भी फैसला लो सोच-समझ कर पूरे मन से लो। अपने सुखी विवाहित जीवन को देखकर कह सकती हूं कि मेरा निर्णय गलत नहीं था। आज भी मेरे माता-पिता साल में एक बार मिलने जरूर आते हैं।

लेकिन, एक बात जो दुख पहुंचाती है, वह यह है कि पूरी दुनिया भारत को महात्मा गांधी और उनके नॉन वॉयलेंस के कारण याद करती और जानती है, लेकिन यहां के लोग गांधीजी के आदर्शों को भूलते जा रहे हैं। गरीब आदमी और रिक्शेवालों पर ताकतवर आदमी से लेकर पुलिस वाले तक डंडा चला देते हैं और कोई बोलने वाला नहीं है। गांधी के देश में यह देखकर दुख होता है। दुख तो इस बात से भी होता है कि यहां लोग लाइन में खड़े होने को अपनी तौहीन समझते हैं। किसी तरह लाइन में लग भी जाएं तो धक्का-मुक्की करते हैं। कहीं पर भी थूक देते हैं। अपने शहर, अपने देश को सुंदर, साफ-सुथरा बनाने में अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं समझते। वे समझते हैं कि यह तो सरकार का काम है। ट्रैफिक का तो इतना बुरा हाल है कि अगर किसी बीमार व्यक्ति को अस्पताल ले जाना हो तो आपका पसीना निकल जाएगा। अगर सरकार तरीके से ट्रैफिक लाइन बना भी दे तो भी संदेह है कि लोग उसका पालन करेंगे। ये छोटी-छोटी चीजें हैं जो परेशान करती हैं। हमें कम-से-कम इतना तो सोचना ही चाहिए कि हम कोई ऐसा कार्य न करें, जिससे देश की छवि को नुकसान पहुंचे।

मुझे सबसे अच्छी बात यह लगी कि यहां के लोग कल्चर और फैमिली ओरिएंटेड हैं। यहां आपको मदद मांगने के लिए किसी से कहना नहीं पड़ता, लोग बिना मांगे ही मदद कर देते हैं। यहां के लोगों से मुझे बहुत सहयोग और प्यार मिला है

kadambini@livehindustan.com

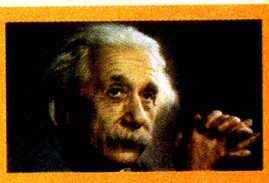

हम सभी भारतीयों का अभिवादन करते हैं, जिन्होंने हमें गिनती करना सिखाया, जिसके बिना विज्ञान की कोई भी खोज संभव नहीं थी।

–एल्बर्ट आइंस्टाइन